**Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal**

**(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)**

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-3* *Issue-5* *May 2026***

**www.researchvidyapith.com** **ISSN (Online): 3048-7331**

# सतत कृषि विकास में जैविक खेती का योगदान

*ब्यूटी कुमारी*

*शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया*

**Article Info:** *(Recieved- 28/02/2026, Accept- 20/03/2026, Published- 10/05/2026)*

**DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i5003**

**सारांश**

वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने मिट्टी की उर्वरता, जल की गुणवत्ता, जैव विविधता तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। कृषि उत्पादन को बढ़ाने की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलित दोहन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय संकट गहराता गया। ऐसी परिस्थितियों में जैविक खेती एक वैकल्पिक और टिकाऊ कृषि प्रणाली के रूप में उभरकर सामने आई है। जैविक खेती न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति, सामाजिक विकास तथा उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

यह शोध लेख सतत कृषि विकास में जैविक खेती के योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें जैविक खेती की अवधारणा, सिद्धांत, आवश्यकता, लाभ, चुनौतियाँ तथा भारत में इसके विकास की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जैविक खेती मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखने, जल संरक्षण, जैव विविधता को सुरक्षित रखने तथा ग्रामीण रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त, यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में भी सहायक है। हालांकि जैविक खेती के समक्ष उत्पादन में कमी, प्रमाणन प्रक्रिया की जटिलता, बाजार तक सीमित पहुँच तथा किसानों में जागरूकता की कमी जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। उचित सरकारी नीतियों, प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा विपणन सुविधाओं के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द**– सतत कृषि विकास, जैविक खेती, पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता, ग्रामीण विकास, जैव विविधता

**प्रस्तावना**

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की अधिकांश जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक जीवन का आधार भी है। हरित क्रांति के बाद कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे देश खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बना। परंतु उत्पादन वृद्धि के लिए रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा उच्च उत्पादकता वाले बीजों पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ी। इस मॉडल ने प्रारंभिक वर्षों में सकारात्मक परिणाम दिए, किंतु समय के साथ इसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे।

मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल स्रोतों का प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास, कृषि लागत में वृद्धि तथा मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव जैसी समस्याएँ गंभीर रूप से उभरने लगीं। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय असंतुलन ने कृषि प्रणाली को और अधिक संवेदनशील बना दिया। ऐसी परिस्थितियों में सतत कृषि विकास की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। सतत कृषि विकास का तात्पर्य ऐसी कृषि प्रणाली से है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखे।

जैविक खेती इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह खेती की ऐसी पद्धति है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग न्यूनतम या पूर्णतः निषिद्ध होता है तथा प्राकृतिक संसाधनों, जैविक खादों, फसल चक्र, हरी खाद और जैविक कीट नियंत्रण तकनीकों का उपयोग किया जाता है। जैविक खेती पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के साथ–साथ आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी लाभकारी मानी जाती है।

आज विश्वभर में जैविक उत्पादों की माँग तेजी से बढ़ रही है। उपभोक्ता स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं और रसायन मुक्त खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता दे रहे हैं। भारत में भी जैविक खेती के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। सिक्किम जैसे राज्य ने स्वयं को पूर्ण जैविक राज्य घोषित किया है। इसके अतिरिक्त, कई राज्यों में जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु सरकारी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

इस शोध लेख का उद्देश्य सतत कृषि विकास में जैविक खेती की भूमिका का विश्लेषण करना है। लेख में जैविक खेती के विभिन्न आयामों, लाभों, चुनौतियों तथा संभावनाओं का अध्ययन किया गया है।

## अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. सतत कृषि विकास की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. जैविक खेती की विशेषताओं एवं सिद्धांतों का अध्ययन करना।
3. सतत कृषि विकास में जैविक खेती के योगदान का विश्लेषण करना।
4. जैविक खेती के आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करना।
5. जैविक खेती के समक्ष उपस्थित चुनौतियों एवं संभावनाओं का मूल्यांकन करना।
6. जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

## अनुसंधान पद्धति

यह शोध लेख द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्टों, कृषि मंत्रालय के प्रकाशनों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों तथा ऑनलाइन स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति से अध्ययन किया गया है।

## सतत कृषि विकास की अवधारणा

सतत कृषि विकास का अर्थ ऐसी कृषि प्रणाली से है जो पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए आर्थिक रूप से लाभकारी तथा सामाजिक रूप से स्वीकार्य हो। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए कृषि उत्पादन को दीर्घकाल तक बनाए रखना है।

सतत कृषि विकास के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं–

- मिट्टी की उर्वरता का संरक्षण
- जल संसाधनों का उचित प्रबंधन
- जैव विविधता का संरक्षण
- रासायनिक प्रदूषण में कमी
- किसानों की आय में वृद्धि
- खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना
- पर्यावरण संरक्षण

सतत कृषि विकास केवल उत्पादन वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कृषि प्रणाली की दीर्घकालीन स्थिरता पर बल देता है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण और संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं के समाधान हेतु सतत कृषि विकास अत्यंत आवश्यक हो गया है।

## जैविक खेती की अवधारणा एवं विशेषताएँ

जैविक खेती ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों और जैविक प्रक्रियाओं का उपयोग करके कृषि उत्पादन किया जाता है। इसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों तथा आनुवंशिक रूप से परिवर्तित बीजों के उपयोग से बचा जाता है।

## जैविक खेती की प्रमुख विशेषताएँ

### प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग

जैविक खेती में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद तथा जैव उर्वरकों का उपयोग किया जाता है। इससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है।

**फसल चक्र का प्रयोग**

फसल चक्र अपनाने से मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है तथा रोग और कीटों का प्रकोप कम होता है।

**जैविक कीट नियंत्रण**

रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर नीम, जैविक घोल, प्राकृतिक शत्रुओं तथा जैविक विधियों से कीट नियंत्रण किया जाता है।

**पर्यावरण संरक्षण**

जैविक खेती पर्यावरण के अनुकूल होती है। इससे जल, मिट्टी और वायु प्रदूषण कम होता है।

**पशुपालन का समावेश**

जैविक खेती में पशुपालन को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है क्योंकि पशुओं से प्राप्त गोबर और जैविक पदार्थ खाद के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

**सतत कृषि विकास में जैविक खेती का योगदान**

जैविक खेती सतत कृषि विकास के विभिन्न आयामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका योगदान पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर देखा जा सकता है।

**मिट्टी की उर्वरता में सुधार**

रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है। जैविक खेती में प्राकृतिक खादों का उपयोग किया जाता है, जिससे मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ती है। इससे मिट्टी की संरचना, जल धारण क्षमता और सूक्ष्मजीवों की सक्रियता में सुधार होता है।

जैविक पदार्थ मिट्टी को पोषक तत्व प्रदान करते हैं और भूमि की उत्पादकता को दीर्घकाल तक बनाए रखते हैं। इससे भूमि क्षरण की समस्या कम होती है।

**जल संरक्षण**

जैविक खेती मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ाती है, जिससे सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का कम उपयोग होने से जल स्रोत प्रदूषित नहीं होते। वर्तमान समय में जल संकट एक गंभीर समस्या है। ऐसे में जैविक खेती जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**जैव विविधता का संरक्षण**

जैविक खेती विभिन्न प्रकार की फसलों, पेड़–पौधों और जीवों के संरक्षण को बढ़ावा देती है। रासायनिक खेती के कारण कई लाभकारी सूक्ष्मजीव और कीट नष्ट हो जाते हैं, जबकि जैविक खेती प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखती है। फसल विविधीकरण और मिश्रित खेती के माध्यम से जैव विविधता को बढ़ावा मिलता है। इससे कृषि प्रणाली अधिक स्थिर और टिकाऊ बनती है।

**पर्यावरण संरक्षण**

रासायनिक खेती से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है तथा पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। जैविक खेती में रासायनिक पदार्थों का उपयोग कम होने के कारण पर्यावरणीय प्रदूषण घटता है। जैविक खेती कार्बन संचयन को बढ़ावा देती है, जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायता मिलती है।

**किसानों की आय में वृद्धि**

जैविक उत्पादों की बाजार में अधिक कीमत मिलती है। इससे किसानों की आय में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर होने वाला खर्च कम हो जाता है। हालांकि प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन में कुछ कमी हो सकती है, लेकिन दीर्घकाल में जैविक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी सिद्ध होती है।

**ग्रामीण रोजगार सृजन**

जैविक खेती श्रम प्रधान होती है। इसमें कम्पोस्ट निर्माण, जैविक खाद तैयार करना, खरपतवार नियंत्रण तथा विविध कृषि गतिविधियों के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

### मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा

रासायनिक खेती से उत्पन्न खाद्य पदार्थों में हानिकारक रसायनों के अवशेष पाए जाते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। जैविक खाद्य पदार्थ रसायन मुक्त होते हैं और स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित माने जाते हैं। जैविक उत्पादों के सेवन से कैंसर, त्वचा रोग तथा अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना कम होती है।

### जलवायु परिवर्तन से अनुकूलन

जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। जैविक खेती मिट्टी की गुणवत्ता और जल धारण क्षमता बढ़ाकर सूखा तथा बाढ़ जैसी परिस्थितियों से निपटने में मदद करती है। यह कृषि प्रणाली प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायक है।

## भारत में जैविक खेती की स्थिति

भारत विश्व के प्रमुख कृषि प्रधान देशों में से एक है। यहाँ विविध जलवायु और कृषि परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं, जो जैविक खेती के लिए अनुकूल मानी जाती हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत में जैविक खेती के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। भारत में मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, कर्नाटक और सिक्किम जैसे राज्य जैविक खेती में अग्रणी हैं। सिक्किम को भारत का पहला पूर्ण जैविक राज्य घोषित किया गया है।

भारत सरकार द्वारा जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

- परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)
- राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP)
- मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट
- राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन

इन योजनाओं का उद्देश्य किसानों को प्रशिक्षण, प्रमाणन, विपणन तथा वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

भारत जैविक उत्पादों के निर्यात में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। मसाले, चाय, कॉफी, दालें, फल तथा औषधीय पौधों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में अच्छी मांग है।

## जैविक खेती के आर्थिक प्रभाव

### उत्पादन लागत में कमी

जैविक खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम होती है। किसान स्थानीय संसाधनों से जैविक खाद तैयार कर सकते हैं, जिससे लागत घटती है।

### बाजार मूल्य में वृद्धि

जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से इनके मूल्य सामान्य उत्पादों की तुलना में अधिक होते हैं। इससे किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होता है।

### निर्यात की संभावनाएँ

अंतरराष्ट्रीय बाजार में जैविक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। भारत के लिए यह विदेशी मुद्रा अर्जित करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

### छोटे किसानों के लिए लाभकारी

छोटे और सीमांत किसान सीमित संसाधनों के साथ जैविक खेती अपना सकते हैं। इससे उनकी आय और आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है।

## जैविक खेती के सामाजिक प्रभाव

### ग्रामीण विकास

जैविक खेती ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और आय के अवसर बढ़ाती है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

### महिलाओं की भागीदारी

जैविक खेती में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कम्पोस्ट निर्माण, बीज संरक्षण और प्रसंस्करण कार्यों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है।

### सामुदायिक सहयोग

जैविक खेती समूह आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देती है। किसान समूह बनाकर प्रशिक्षण, विपणन और प्रमाणन प्रक्रियाओं में सहयोग कर सकते हैं।

### स्वास्थ्य जागरूकता

जैविक उत्पादों के प्रति बढ़ती जागरूकता से समाज में स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है।

## जैविक खेती की चुनौतियाँ

यद्यपि जैविक खेती के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके समक्ष कई चुनौतियाँ मौजूद हैं।

### प्रारंभिक उत्पादन में कमी

रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर परिवर्तन के शुरुआती वर्षों में उत्पादन कम हो सकता है। इससे किसान आर्थिक जोखिम महसूस करते हैं।

### प्रमाणन प्रक्रिया की जटिलता

जैविक उत्पादों के प्रमाणन की प्रक्रिया जटिल और खर्चीली होती है। छोटे किसानों के लिए यह एक बड़ी समस्या है।

### बाजार तक सीमित पहुँच

कई किसानों को जैविक उत्पादों के लिए उचित बाजार नहीं मिल पाता। बिचौलियों के कारण किसानों को उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता।

### जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी

ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक किसान जैविक खेती की तकनीकों से परिचित नहीं हैं। प्रशिक्षण और तकनीकी जानकारी की कमी इसकी प्रगति में बाधा बनती है।

### जैविक इनपुट की उपलब्धता

उच्च गुणवत्ता वाले जैविक बीज और जैव उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होने से किसानों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

### सरकारी सहायता का अभाव

कई क्षेत्रों में किसानों को पर्याप्त वित्तीय सहायता और प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। इससे जैविक खेती अपनाने की गति धीमी रहती है।

## जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु सुझाव

### प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम

किसानों को जैविक खेती की तकनीकों, लाभों और विपणन संबंधी जानकारी प्रदान की जानी चाहिए। कृषि विश्वविद्यालयों और सरकारी संस्थाओं को नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

### प्रमाणन प्रक्रिया को सरल बनाना

जैविक प्रमाणन प्रक्रिया को सरल और कम खर्चीला बनाया जाना चाहिए ताकि छोटे किसान भी इसका लाभ उठा सकें।

### विपणन सुविधाओं का विकास

जैविक उत्पादों के लिए विशेष बाजार, ई–मार्केटिंग प्लेटफॉर्म तथा सहकारी समितियों का विकास किया जाना चाहिए।

### वित्तीय सहायता और सब्सिडी

सरकार को जैविक खेती अपनाने वाले किसानों को ऋण, सब्सिडी तथा अन्य आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए।

### अनुसंधान और नवाचार

जैविक खेती से संबंधित अनुसंधान को बढ़ावा देना आवश्यक है। नई तकनीकों और उन्नत जैविक विधियों का विकास किसानों के लिए लाभकारी होगा।

### स्कूल और कॉलेज स्तर पर शिक्षा

शैक्षणिक संस्थानों में जैविक खेती और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित विषयों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे युवाओं में जागरूकता बढ़ेगी।

### किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा

किसानों के समूह और किसान उत्पादक संगठन (थ्च्ब्) जैविक उत्पादों के विपणन और प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

### निष्कर्ष

सतत कृषि विकास वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुका है। बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरणीय समस्याओं ने पारंपरिक रासायनिक कृषि प्रणाली की सीमाओं को उजागर कर दिया है। ऐसी परिस्थितियों में जैविक खेती एक प्रभावी और टिकाऊ विकल्प के रूप में सामने आई है। जैविक खेती केवल एक कृषि तकनीक नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक विकास और आर्थिक समृद्धि का समन्वित मॉडल है। यह मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, जल संरक्षण, जैव विविधता को सुरक्षित रखने तथा प्रदूषण कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त, यह किसानों की आय बढ़ाने, ग्रामीण रोजगार सृजन तथा मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा में भी सहायक है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जैविक खेती की व्यापक संभावनाएँ हैं। देश की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ पहले से ही प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रही हैं, इसलिए किसानों के लिए जैविक खेती को अपनाना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है। सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ, बढ़ती उपभोक्ता मांग तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार में जैविक उत्पादों की लोकप्रियता इस क्षेत्र के विकास के लिए सकारात्मक संकेत हैं। हालांकि जैविक खेती के समक्ष उत्पादन में कमी, प्रमाणन प्रक्रिया की जटिलता, बाजार की समस्याएँ तथा तकनीकी जानकारी की कमी जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार, कृषि वैज्ञानिकों, गैर सरकारी संगठनों तथा किसानों के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। यदि उचित नीतियों, प्रशिक्षण, अनुसंधान और विपणन सुविधाओं के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए, तो यह न केवल कृषि क्षेत्र को टिकाऊ बना सकती है, बल्कि ग्रामीण विकास, पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इसलिए कहा जा सकता है कि सतत कृषि विकास की दिशा में जैविक खेती एक प्रभावशाली और दीर्घकालिक समाधान है।

## Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

### संदर्भ सूची


1. शर्मा, आर. के., जैविक खेती एवं सतत कृषि विकास, नई दिल्ली।
2. सिंह, बी. डी., भारतीय कृषि प्रणाली और पर्यावरण संरक्षण।
3. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट।
4. राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP) रिपोर्ट।
5. FAO Report on Organic Agriculture and Sustainable Development.
6. वर्मा, एस. पी., सतत विकास और कृषि अर्थशास्त्र।
7. ICAR Publications on Organic Farming.
8. मिश्रा, एच. एन., ग्रामीण विकास और जैविक कृषि।
9. UNEP Report on Sustainable Agriculture.
10. विभिन्न शोध पत्रिकाएँ एवं ऑनलाइन स्रोत।


## Cite this Article

***'ब्यूटी कुमारी', " सतत कृषि विकास में जैविक खेती का योगदान",*** Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."